अँधेरे का भूत

फरीदा खल्अतबरी

चित्रांकनः
नसीम आज़ादी

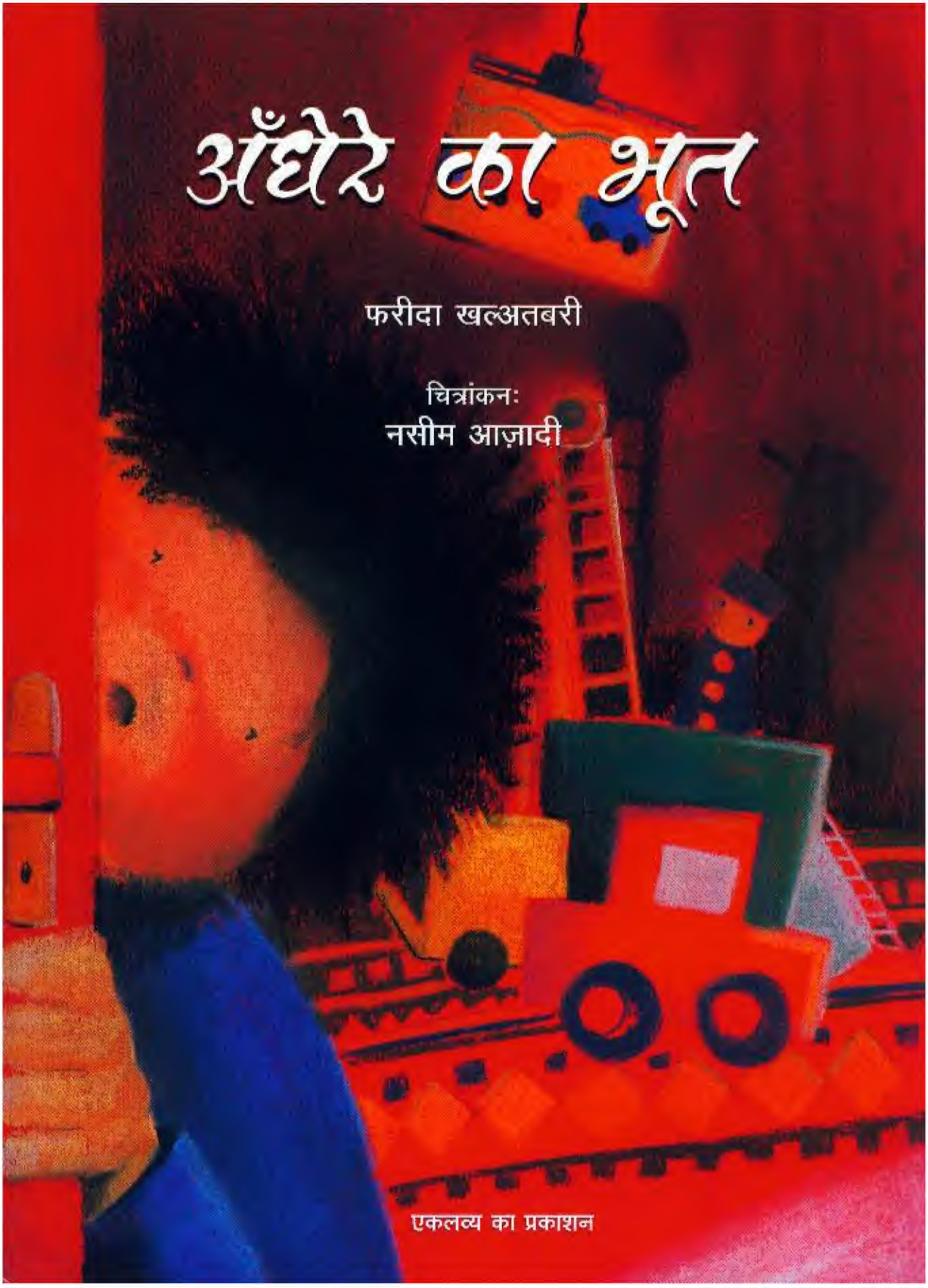

एकलव्य का प्रकाशन

अँधेरे का भूत

फरीदा खल्अतवरी

चित्रांकनः
नसीम आज़ादी

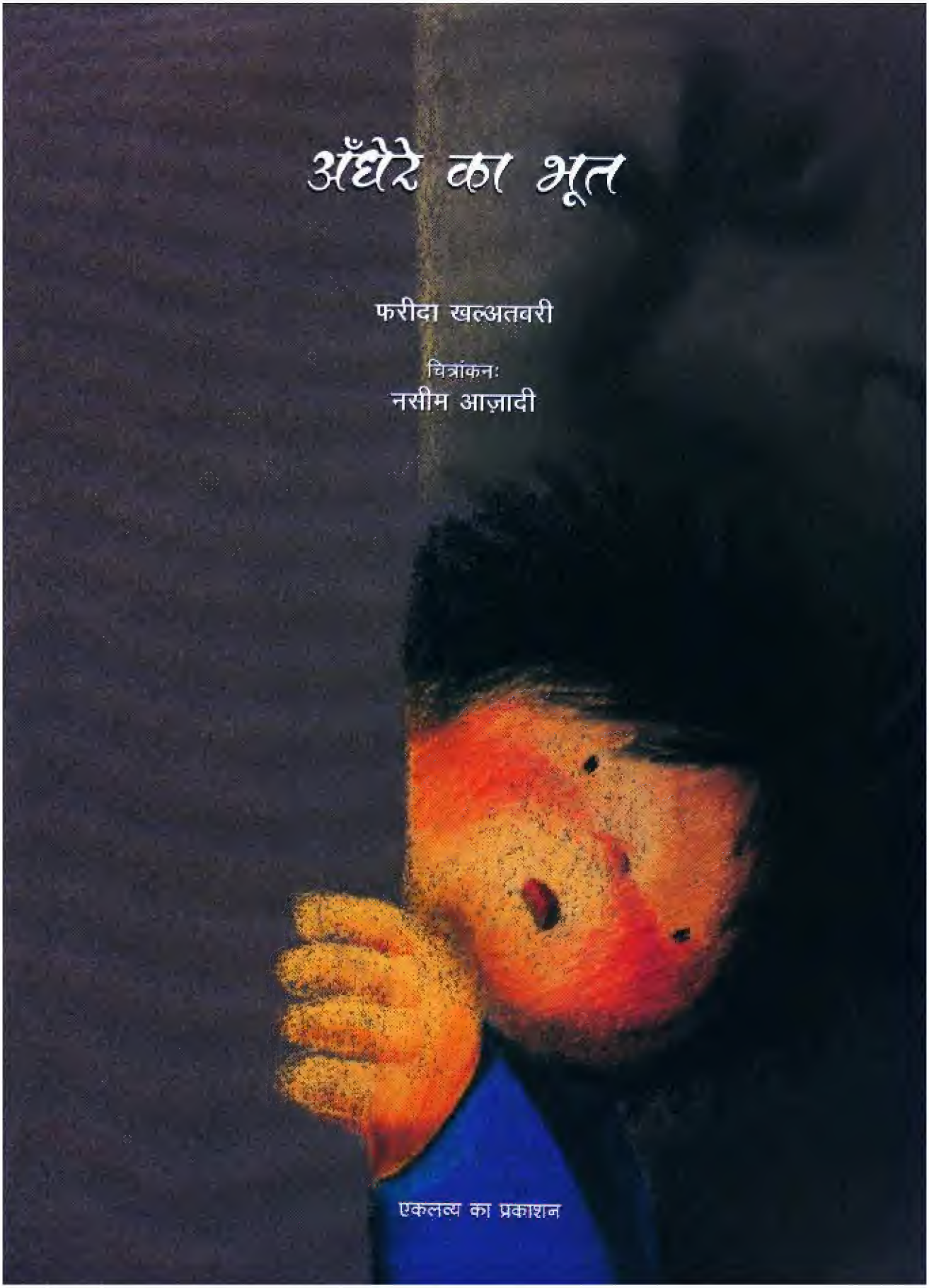

एकलव्य का प्रकाशन

अँधेरे का भूत

ANDHERE KA BHOOT

कहानी: फरीदा खल्अतबरी

चित्रांकन: नसीम आज़ादी

अँग्रेज़ी से अनुवाद: दीपाली शुक्ला

Originally in Persian published by Shabaviz
© Shabaviz, Tehran, Iran
हिन्दी अनुवाद © 2011 एकलव्य

संस्करण: जुलाई 2011/ 5000 प्रतियाँ
पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित।
कागज़: 100 gsm मेपलिथो व 200 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
ISBN: 978-81-906971-0-1
मूल्य: ₹ 35.00

प्रकाशक: एकलव्य

ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोन: (0755) 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: आदर्श प्रायवेट लिमिटेड, भोपाल (म.प्र.) फोन: 2555442

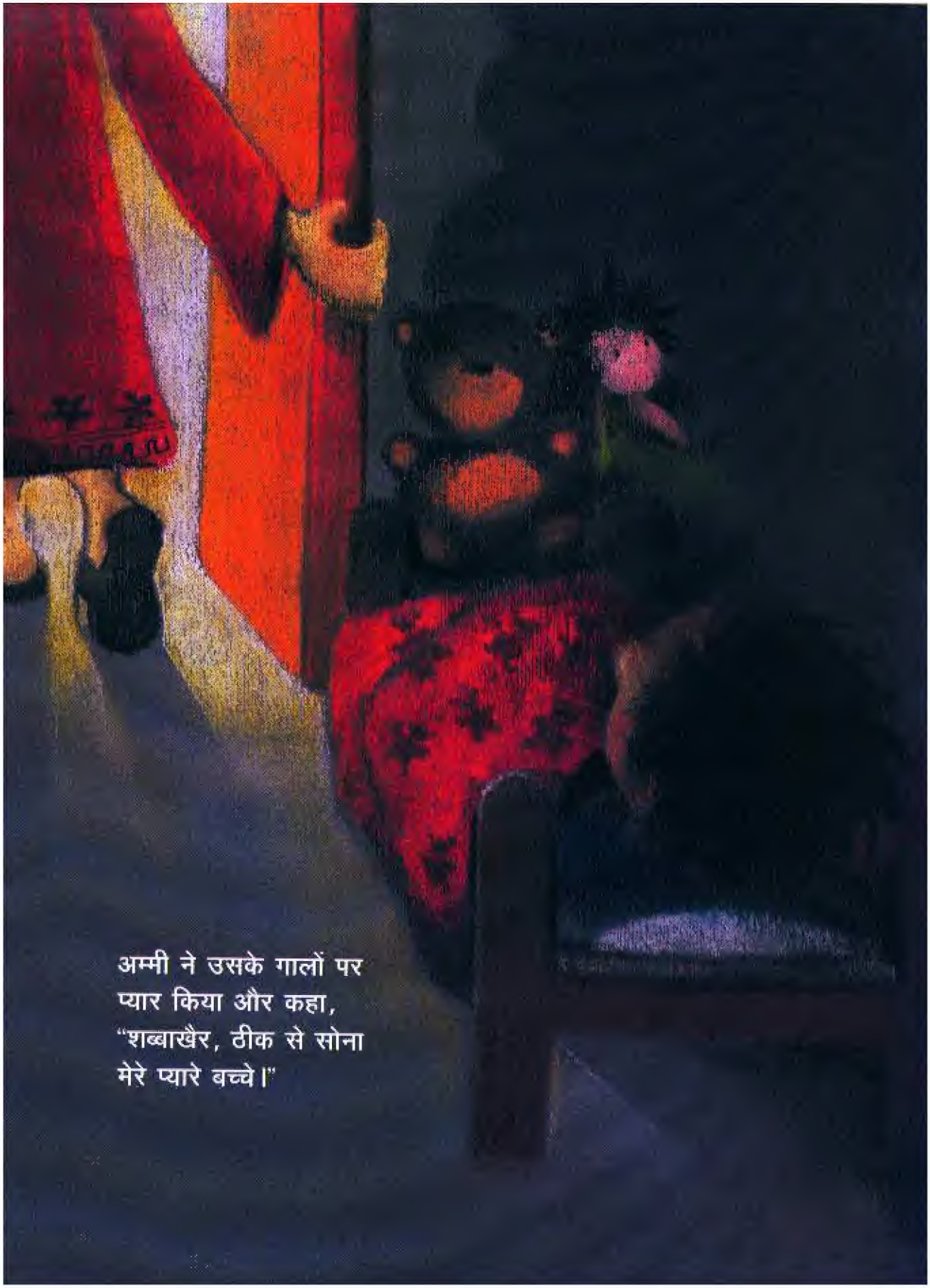

अम्मी ने उसके गालों पर
प्यार किया और कहा,
"शब्बाखैर, ठीक से सोना
मेरे प्यारे बच्चे।"

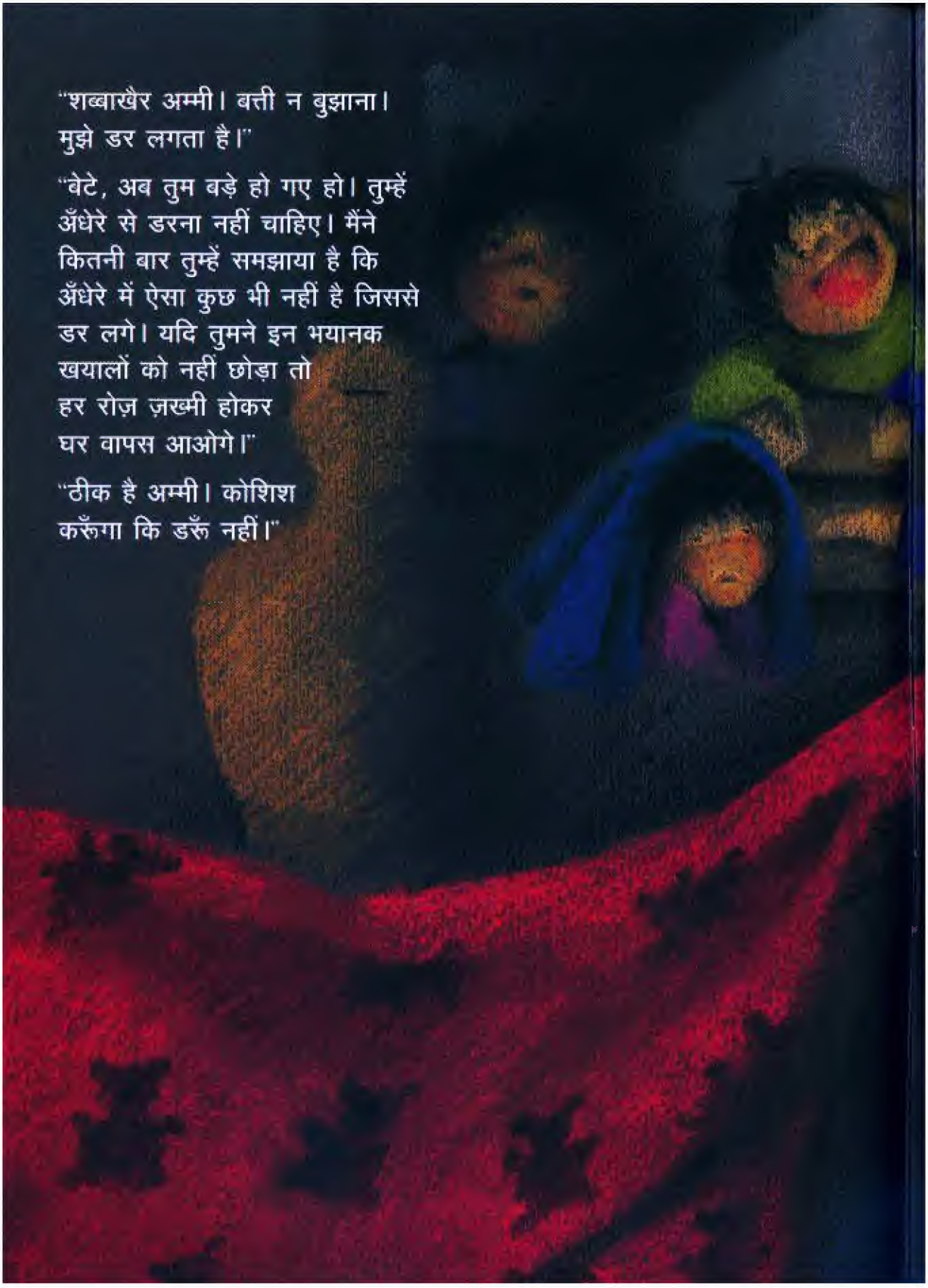

"शब्बाखैर अम्मी। बत्ती न बुझाना।
मुझे डर लगता है।"

"बेटे, अब तुम बड़े हो गए हो। तुम्हें
अँधेरे से डरना नहीं चाहिए। मैंने
कितनी बार तुम्हें समझाया है कि
अँधेरे में ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे
डर लगे। यदि तुमने इन भयानक
खयालों को नहीं छोड़ा तो
हर रोज़ ज़ख्मी होकर
घर वापस आओगे।"

"ठीक है अम्मी। कोशिश
करूँगा कि डरूँ नहीं।"

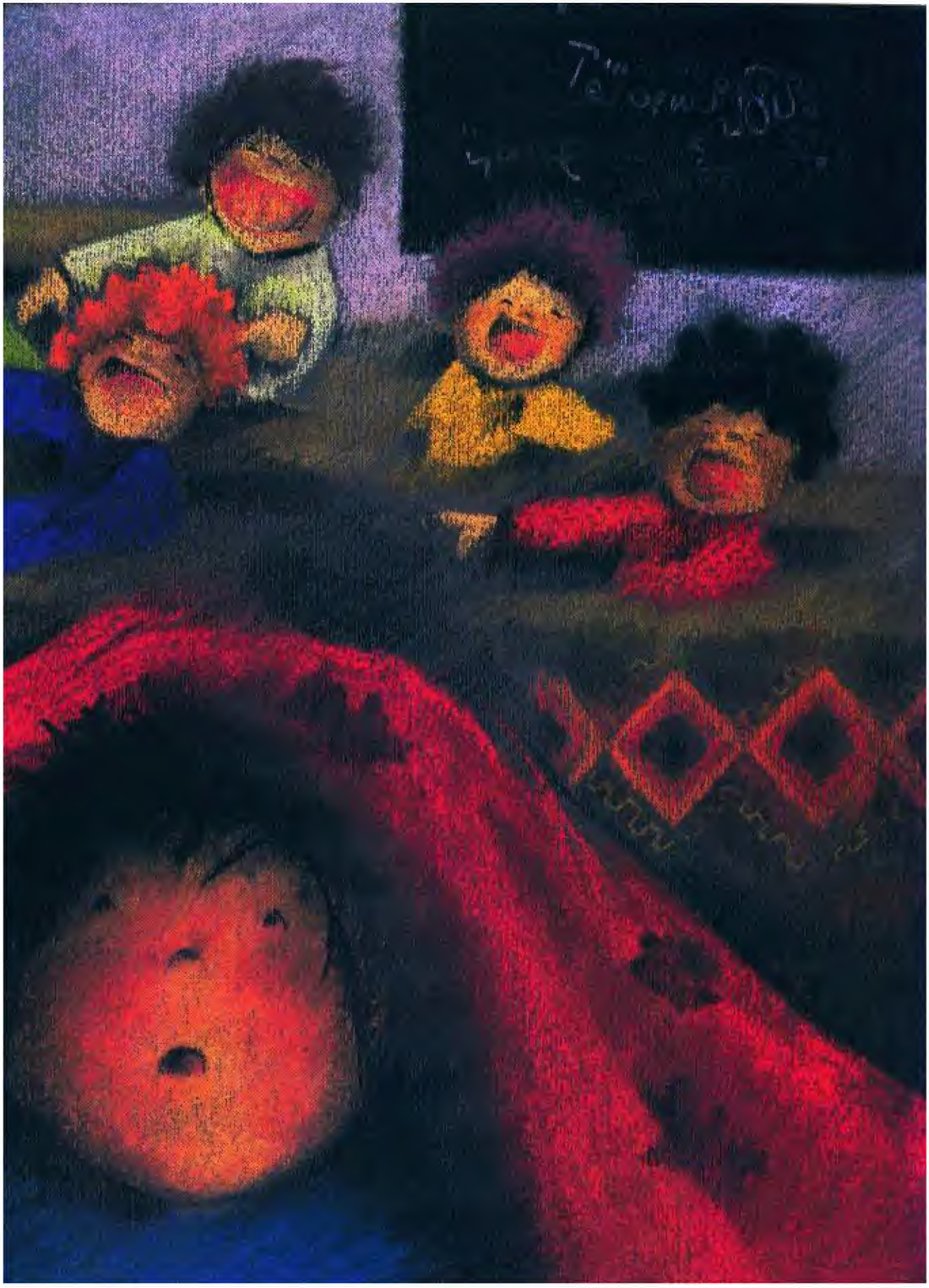

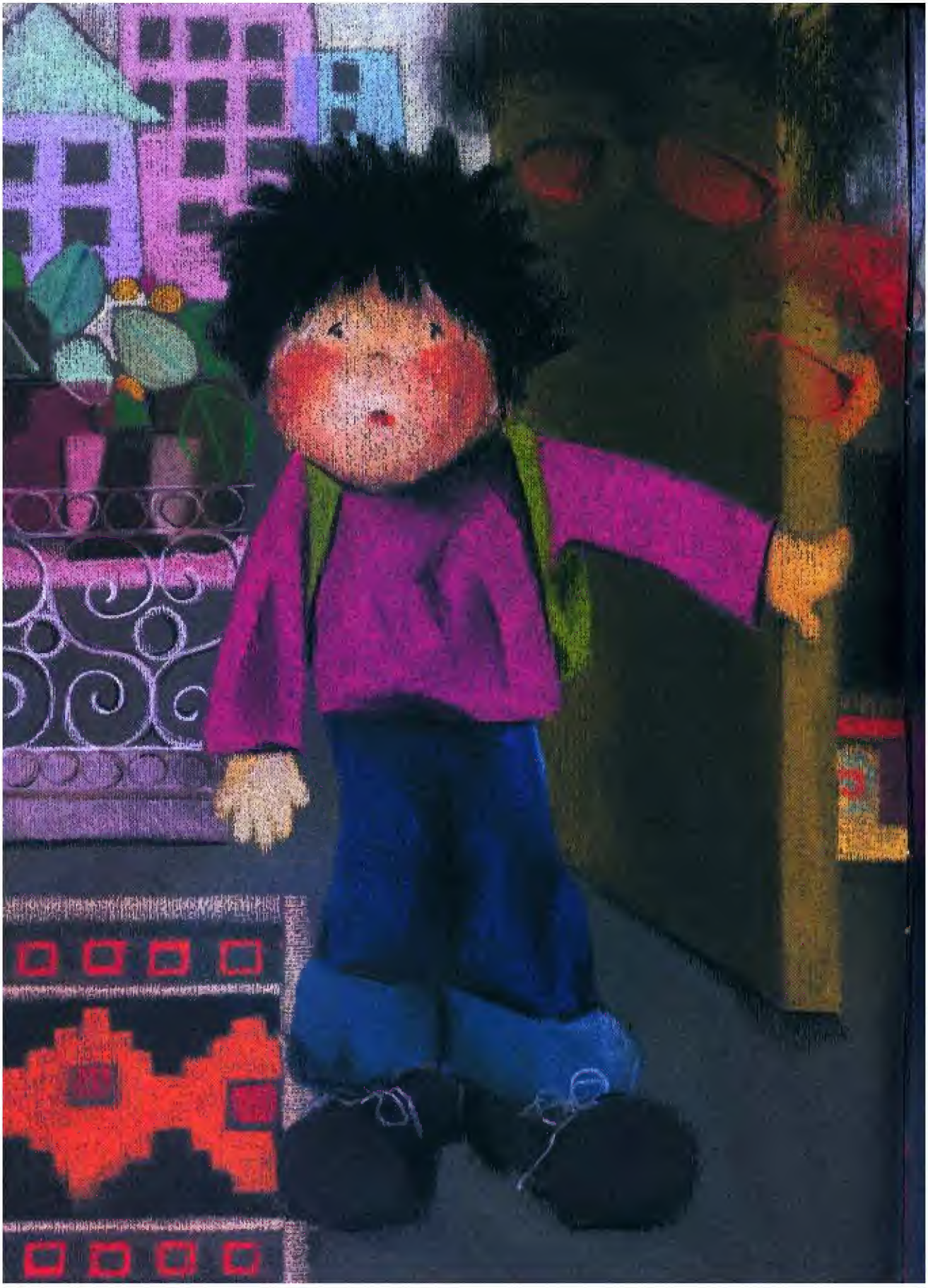

जब सारी बत्तियाँ बुझ गईं, उसने कम्बल सिर के ऊपर तक खींच लिया। उसके खयालों में स्कूल घूम रहा था। सभी बच्चे उसका मज़ाक उड़ाते थे। वे उसे "नन्हा चूहा" कहकर चिढ़ाते थे क्योंकि वह हर आहट से घबराकर चूहे की तरह कोने में छिप जाता था। बच्चों को यह पता था और वे उसे डराने के लिए अजीबोगरीब हरकतें किया करते थे।

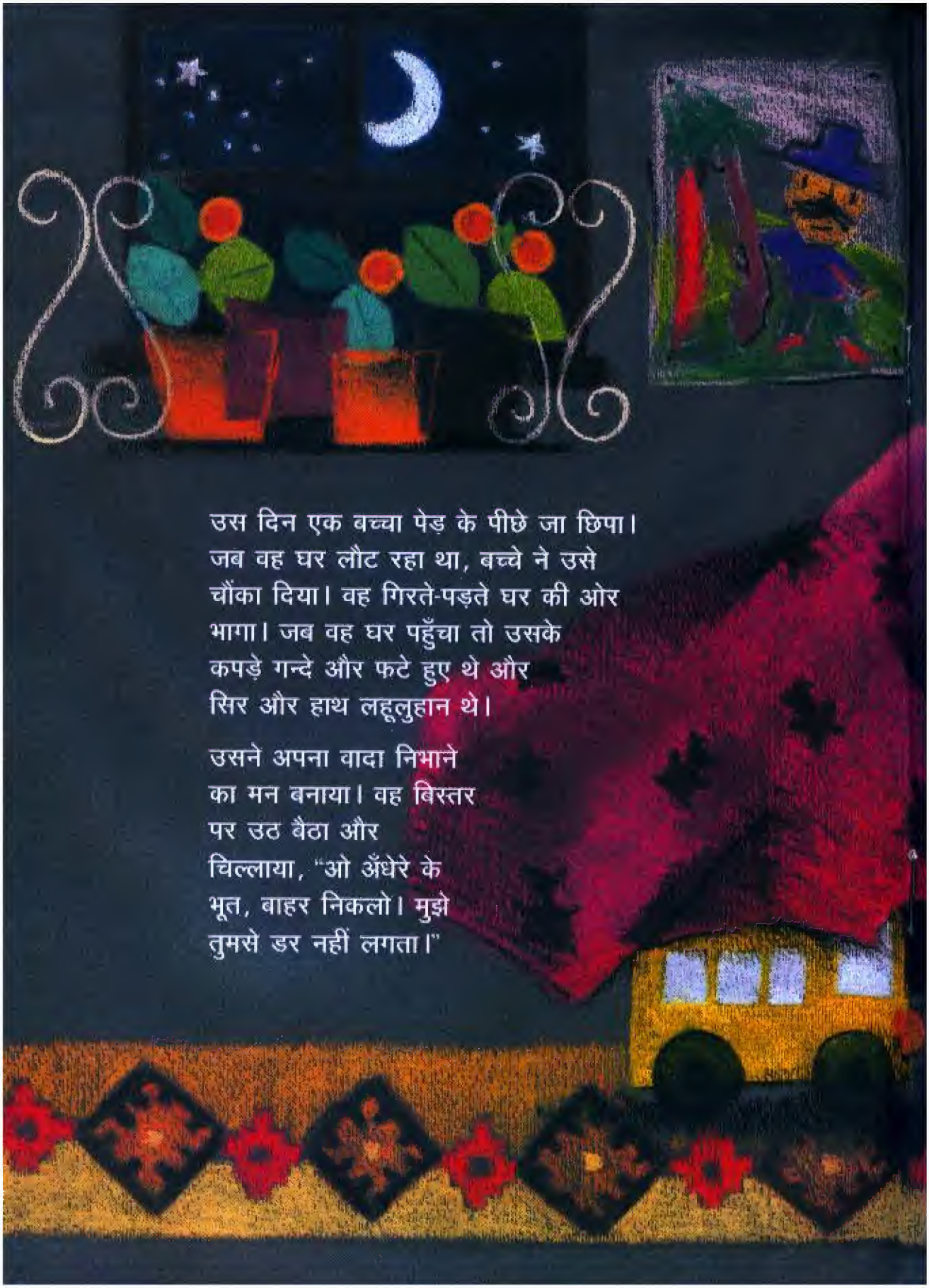

उस दिन एक बच्चा पेड़ के पीछे जा छिपा। जब वह घर लौट रहा था, बच्चे ने उसे चौंका दिया। वह गिरते-पड़ते घर की ओर भागा। जब वह घर पहुँचा तो उसके कपड़े गन्दे और फटे हुए थे और सिर और हाथ लहूलुहान थे।

उसने अपना वादा निभाने का मन बनाया। वह बिस्तर पर उठ बैठा और चिल्लाया, "ओ अँधेरे के भूत, बाहर निकलो। मुझे तुमसे डर नहीं लगता।"

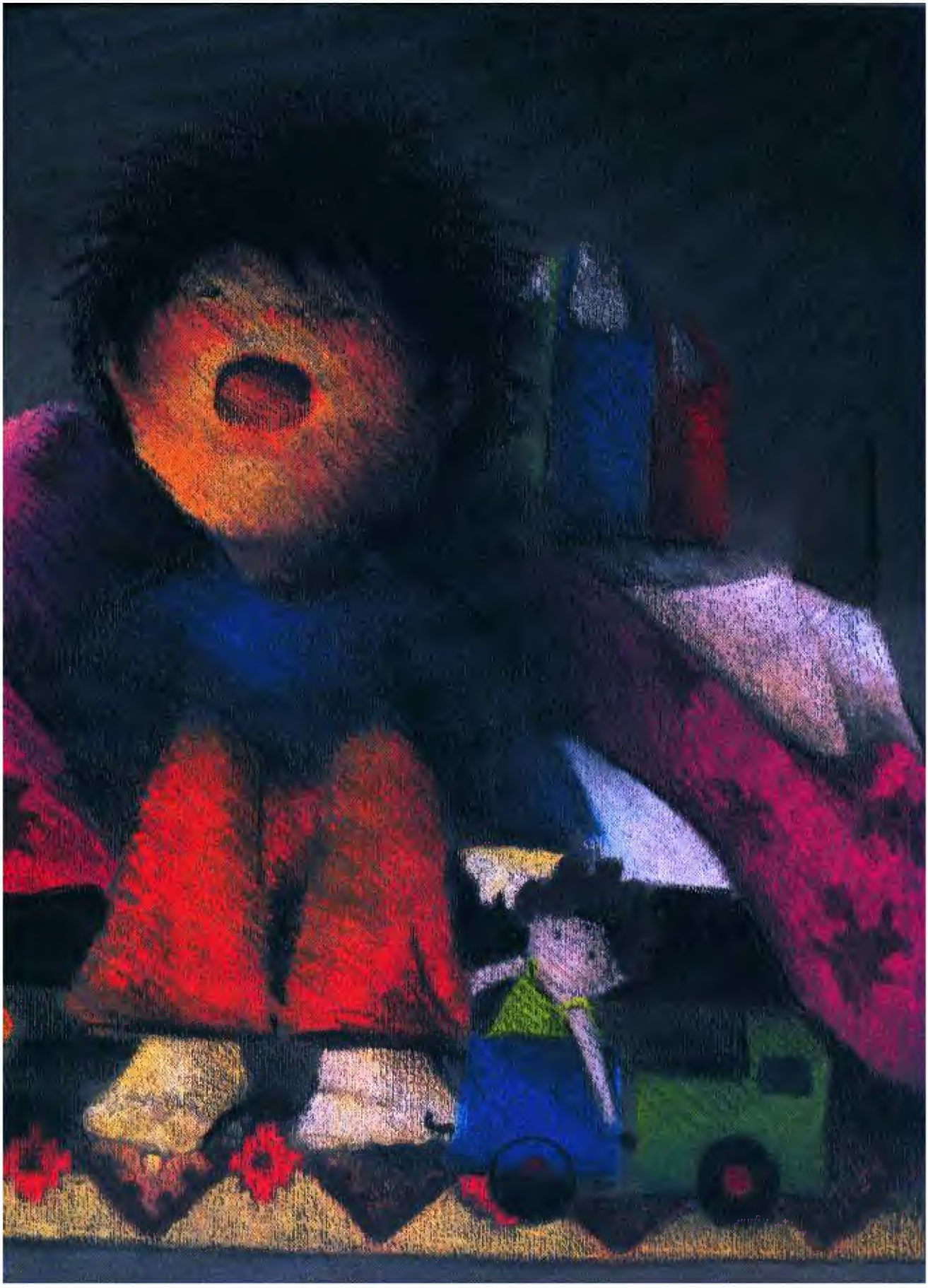

अचानक उसका पलंग हिलने लगा। चाँद की रोशनी में उसने देखा कि एक बड़ा और स्याह भूत उसके सामने खड़ा है।

भूत ने कहा, "बेशक, तुम्हें डरना नहीं चाहिए। मैं उन बच्चों को नुकसान नहीं पहुँचाता जो मुझे बुलाते हैं। सही है ना, नन्हे चूहे?"

उसकी आँखें खौफ से फैल गईं। हकलाते हुए वह बोला, "मेरा...नाम...नन्हा...चूहा...नहीं है। बच्चे मुझे इस नाम से पुकारते हैं। पर तुमने कैसे जाना?"

"मैं सब कुछ जानता हूँ।"

"तब तुम्हें पता होगा कि मुझे हँसी उड़वाना पसन्द नहीं है। क्या तुम उन बच्चों को डराने में मेरी मदद करोगे जो मेरा मज़ाक बनाते हैं?"

"ठीक है। चलो चलें। जिस भी बच्चे को तुम दिखाओगे उसे मैं डराऊँगा।"

"शुक्रिया।"

तब से हर रात दोनों दूसरे बच्चों को डराने निकलते।

अब केवल एक ही था जो अँधेरे से नहीं डरता था, और वह था नन्हा चूहा। भूत के साथ उसकी दोस्ती के बारे में कोई नहीं जानता था। लेकिन सभी जानते थे कि कुछ खेल तो हुआ है क्योंकि भूत उसके पास नहीं फटकता था।

एक बच्चा बहुत शरारती था। उसे सब "छोटा शैतान" कहते थे। छोटे शैतान ने इस राज़ से पर्दा हटाने की ठानी और इसलिए उसने नन्हे चूहे को अपने जन्मदिन की दावत में बुलाया।

"कल मेरा जन्मदिन है। तुम्हें आना ही है। लेकिन जल्दी आना क्योंकि सारे बच्चे अँधेरा होने से पहले घर जाना चाहते हैं।"

"ठीक है। उन्हें जल्दी जाने दो। मैं रुकूँगा।"

"तुम्हारा मतलब है, तुम्हें अब अँधेरे से डर नहीं लगता?"

"बिलकुल नहीं। अँधेरे का भूत मेरा दोस्त है। जो बच्चे भूत को बुलाते हैं उन्हें वह नहीं डराता।

छोटे शैतान ने सोचना शुरू किया लेकिन कुछ कहा नहीं।

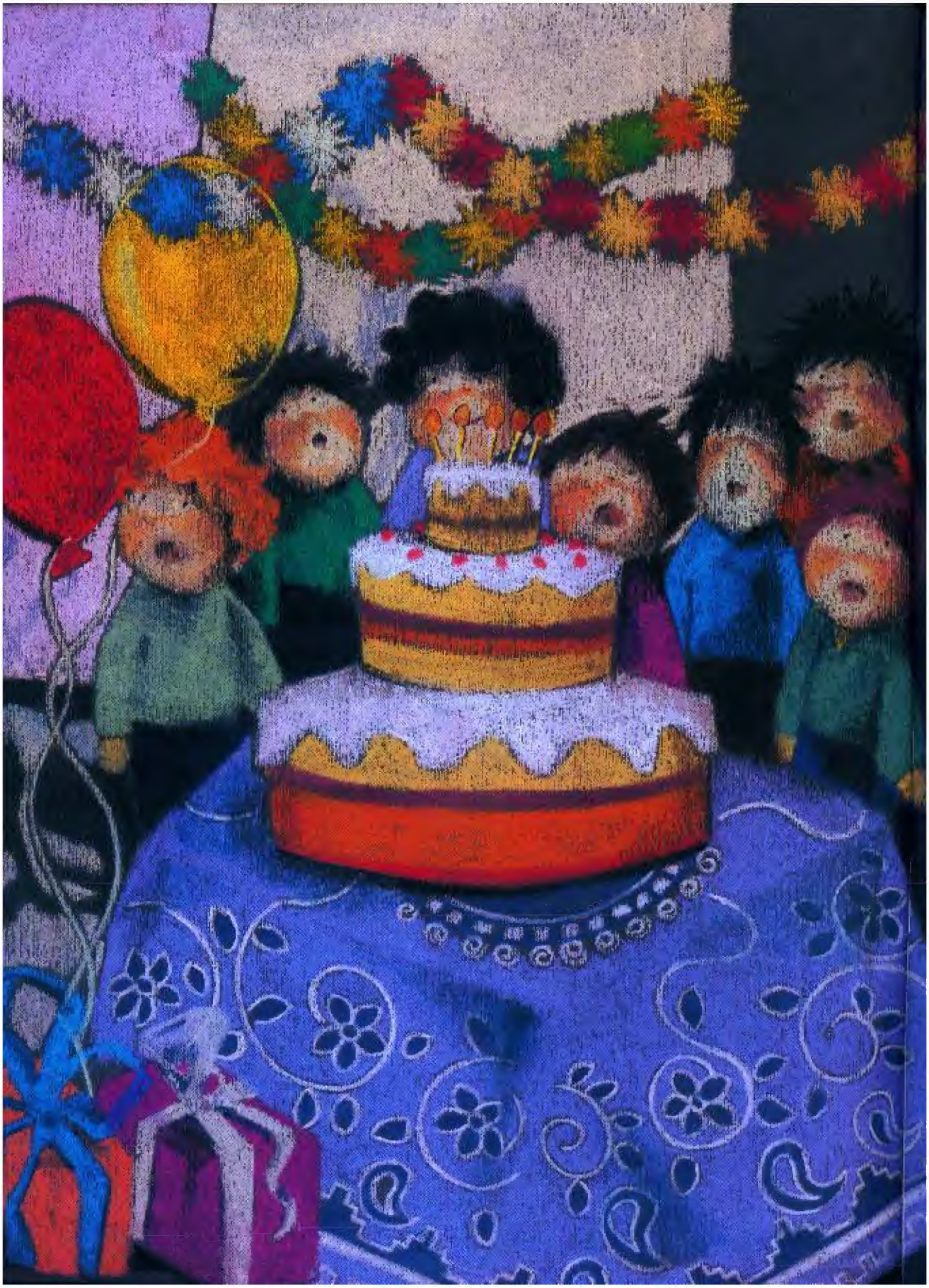

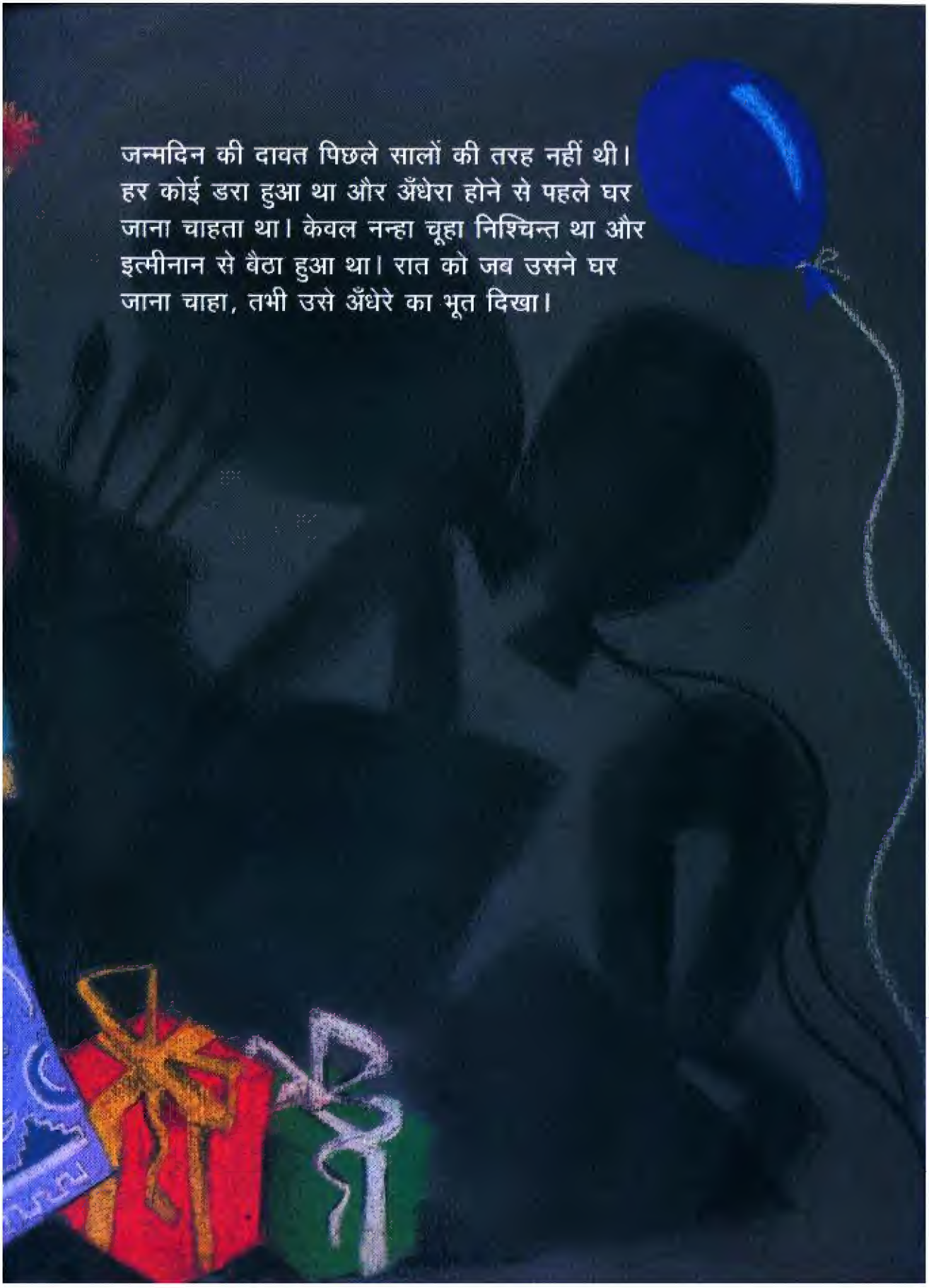

जन्मदिन की दावत पिछले सालों की तरह नहीं थी। हर कोई डरा हुआ था और अँधेरा होने से पहले घर जाना चाहता था। केवल नन्हा चूहा निश्चिन्त था और इत्मीनान से बैठा हुआ था। रात को जब उसने घर जाना चाहा, तभी उसे अँधेरे का भूत दिखा।

हैरान हो उसने पूछा, "तुम यहाँ क्या कर रहे हो? सारे बच्चे तो जा चुके हैं। डराने के लिए कोई नहीं है।"

"हाँ, मैं जानता हूँ। लेकिन मैं केवल उन बच्चों को नहीं डराता जो मुझे बुलाते हैं।"

दहशत से नन्हा चूहा कुछ कदम पीछे हटा और बोला, "पर...पर...मैंने तो तुम्हें नहीं बुलाया था!"

"हाँ। आज छोटे शैतान ने मुझे बुलाया है!"

वह हर बात पर डर जाता था। और सारे बच्चे इस पर उसका मज़ाक उड़ाते। वे उसे "नन्हा चूहा" कहकर चिढ़ाते। पर एक दिन नन्हे चूहे ने अँधेरे के भूत से दोस्ती कर ली। फिर क्या हुआ?

ISBN: 978-81-906971-0-1
9 788190 697101

एकलव्य

मूल्य: ₹ 35.00
A0161H

parag [illegible] के वित्तीय सहयोग से विकसित